

प्रेमावली ॥

जिसमें

भगवतीस्तुति, गङ्गास्तुति, शिवस्तुति, लावनी मारफ़त रङ्गत बशीकरण बारहमासा बिरहिनी रङ्गत बशीकरण, पनिहारी लीला, बारहमासा लावनी रंगत बशीकरण, बारहमासा रेखताओं में, हिंडोला राधा कृष्णजी, बरसात बिरहिनी रंगत बशीकरण, द्रौपदी, वैद्यलीला, द्रौपदीस्तुति, बसन्तऋतु व रस सवैया बिरहकी बारहमासी और होली ये सब अनेक प्रकार के दोहा सोरठा लावनी और नाना प्रकार के राग रागिनियों में वर्णित हैं

जिसको

श्रीमहाशिव गयादीन वकील मुक़ाम हदीरा जिले शाहजहांपुरनिवासी ने बड़े परिश्रम से गानविद्याभिलाषियों के आनन्दार्थ रचनाकिया ॥

दूसरी बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
मई सन् १८९८ ई० ॥

प्रेमावली ॥

सोरठा ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश सौरौं सरस्वति मातु तोहिं । भृगुसुत सहित गणेश कृष्णसहित बलदेवके १ नारद सुर सनकाद समचंद्र भ्रातन सहित। द्रोण सहित प्रहलाद और देव सुमिरौं सबै २ पारथ को शिरनाय शुक्राचार्य्य इत्यादि सब। निशिपति गङ्गामाय दिवसराज सीता सहित ३ इन्द्रादिक सबदेव माता लच्मीको सुमिरि। भगवति अरु महिदेव यमुन शारदाको सुमिरि ४ तुलसी केशव दास सबलसिंह चौहान कवि। कबि ब्रजबासीदास कालिदास तुम को सुमिरि ५ सूरदास रघुनाथ बालमीकि इत्यादि सब। नाय सबन को माथ नवलदास महराज कवि ६ ॥ दोहा ॥ प्रेमावली बनावऊं निजमतिके अनुसार। चमा कीजियो चूक मम बिनवौं बारंबार॥ भगवति स्तुति ॥ हे शैल सुता भयभंजनि. जनसुखदाई । अघ दूरि होहिं जो भजै भवानी माई ॥ रबि शशि लखिहोत मलीन बदन छबि आला। काली हुइ धारो कठिन शरीर कराला॥ युत नैन लाल जिह्वा अरु दन्त बिशाला । तिहुँलोक चतुर्दश भुवन तेरो उजियाला॥ जैजै भगवति बलवान जनन सुखदाई। अघदू० १॥ नरसिंह रूपधरि हिरण्यकशिपु संहारो। बनिकै बावन तुमनृप बलि को छलिडारो॥ रावणको मारी रामरूप तुमधारो। धरि कृष्णरूप भगवती कंसको मारो॥ हति बक्रदन्त शिशुपाल करी प्रभुताई। अघदूरिहों० २॥ ब्रह्मा अरु बिष्णु प्रहोम करतहैं माई। नारद शारद सनकादि करत सेवकाई॥ नवकोटि जगत से नाम निहारे

माई। राजत अतिरूप अनूप करी प्रभुताई॥ दासनपर रक्षा रहै सदा अम्बिकाई। अघदूरिहों० ३॥ तुम बिन जननी ममकौन बिपति को टारै। तुम बिन जननी यह कौन भरै भंडारै॥ चरणनमें तुम्हरो ध्यान दास जो धारै। तुमदेहु ताहि बरदान कष्ट निर्वारै॥ दुख गयादीन को दूरि सकल होजाई। अघदूरिहों० ४॥ गङ्गास्तुति राग बिहाग॥ भवानी भवतरनी माई। भजो मन सुरसरि सुखदाई॥ तापत्रैमोचत दरश प्रताप। दूरि हैजात दूरिसे पाप॥ बंश तारन भागीऋषि आप। बहुत दिन किया तुम्हारा जाप॥ दोहा॥ ब्रह्मा बरदीन्ह्यो तबै लखि तप तेज अपार। सुरपुरसे आई शिवपुरमें महिमा अपरंपार॥ टेक॥ कहे कवि को सुन्दरताई। भजोमनसुर० १॥ ईश शिरपर निज बैठाई। माइपुनि महिमएडलआई॥ सवारी भागीऋषि आई। तरंगन धार माइ जाई॥ दोहा॥ हरद्वारमें आइ पुनि पदवी प्रागमें पाइ। त्रिबेणी बैकुण्ठ नसेनी जो कोई खेत नहाइ॥ टेक॥ ये महिमा वेदनमें गाई। भजोमन० २॥ मिली गङ्गासागर में जाय। बड़वानलकी झाड़ बुझाय॥ सगर सुततारे करी सहाय। चले सब सुरपुरको हरषाय॥ दोहा॥ नाना पतित अनन्त अति पहुँचाये निजधाम। बन्दकरे फाटक नरकन के भई शन्तनु ऋषि वाम॥ टेक॥ फिरी जगमें गङ्गाधराई। भजो० ३॥ खतम खाता कीन्हो यमद्वार। वही पापिनकी कीन्ही क्षार॥ विष्णु ब्रह्मापुर कियो ब्योहार। ईशपुर हुण्डीभई तयार॥ दोहा॥ कीरति बरनीजात नहिं रही सकल जगछाय। गयादीनकरजोरि युगल हरिदेहु भक्तिमोहिं माय॥ टेक॥ रागिनी में स्तुतिगाई। भजोमन० ४॥ अथ शिवस्तुति लावनीरंगत बशीकरन॥ हे चन्द्रभाल जनजानि दया यह कीजे। करि कृपादास को कष्ट सकल हरि लीजे॥ टेक॥ तुम्हरे समान दु-

सरो जगतमें नाहीं। निरखारत सकल कलेश जाहिं प्रभुपाहीं॥ आपुहि दुशमन को नाश करत क्षणमाहीं। आपुहि दासन की बिथा हरत पलमाहीं॥ टेक॥ जन आरति करत पुकार मोहिं वर दीजै। करिकृपा० १॥ तनहै अतिदुर्बल नाथ बिपतिने घेरो। तुम हौ सब लायक नाथ ओर मम हेरो॥ जनकी प्रभु आपुहि आय बिथा निर्बेरो। देउ अमरभक्ति त्रिपुरारि करौ निजचेरो॥ टेक॥ प्रभु मेरो सकल कलेश गरल सम पीजै। करिकृपा दासको० २॥ तन लसत भुजंगम शीश जटा विषधारी। देवन के देव महेश वृषभ असवारी॥ दुखमोचन लोचन तीनि सकल हितकारी। गिरिजा पति ओढ़े नागचर्म्म त्रिपुरारी॥ टेक॥ तुम से जो होवै बिमुख हाथसो मीजै। करिकृपा दासको० ३॥ है नीलकण्ठ अरु भस्म चिता तनसोहै। पद सोहत पद्म अनूप देखि मनमोहै॥ अघनाशी चन्द्र लिलाट जगत अस को है। इन चरण कमल को ध्यान धरत जग जोहै॥ टेक॥ फल पावत होत प्रकाश पाप तन छीजै। करिकृपा दासको० ४॥ गुण गावत ब्रह्मा विष्णु ध्यान धरि तोरे। नारद शारद सनकादि कहत गुणथोरे॥ कहि गयादीन यह ख्याल कहत करजोरे। सब करौ काज महराज आज प्रभुमोरे॥ टेक॥ अब पूरण करु अभिलाष हियो पासीजै। करि कृपा दास को भक्ति चरणकी दीजै ५॥ इति॥ अथ लावनी मारफ़त रंगतवशीकरन॥ यक्हूर सामने आय आंख दिखला के। कल सें बेकल करगई कमर लचका के॥ टेक॥ इस क़दर हुआ मालों का उजियाला है। झुकि झुकि चूमै रुख्सार हरयक बालाहै॥ बालोंका पेंच दर्मानी बैठाला है। झुमकोंने किया ऊपरसे उजियाला है॥ टेक॥ तिर्छी चितवन जोबन की झलक झलकाके। कलसे बेक-

लं० १॥ क्या खालजनखपर खिला तिली ज्यों काली। लालोंको रही शर्माय लबोंकी लाली॥ सारी साटनकी और दुपट्टा जाली। चोली फुलवरकी पहन मोहनी डाली॥ टेक॥ घूंघट पट नैन चलाय चमक चमकाके। कलसे बेकल० २॥ मखमलसे मुलायम शिकमव नाज़ुक पनकी। हँसलीसे पतली कमर बदन साबुनकी॥ मिस्सीकी बाढ़दांतोंकी मनमोहनिकी। लेगई कलेजाकाढ़ सांगि सैननकी॥ टेक॥ यकमारि पलक मुंहपर वह बाल बिखड़ा के। कलसे बेकल करगई० ३॥ दिन रात उसीकी चाह किया करते हैं। फिरभी क़िस्मतको यादकिया करते हैं॥ अन्दाज चाल जो देख लिया करते हैं। वह गयादीन तहरीर किया करते हैं॥ टेक॥ गुलबदन मदनमें भरीपरी मुसुकाके। कलसे बेकल करगई कमर लचकाके ४॥ इति॥ अथ बारहमासा बिरहिनीरंगतवशीकरन रागबिहाग॥

करूं पीतम की यादगारी। रहेग़म दिल को हरबारी॥ आषाढ़॥ लगा आषाढ़ हुये घनघोर। जिगर पर जोबनका हैं जोर॥ घटा दिल देखि घटाका शोर। चमकता है जुगुनू चहुँओर॥ दोहा॥ काली काली गगनपर बदली रही हैं छाय। हाय हाय करता दिल मेरा तड़पि२ नियजाय॥ टेक॥ हुआहै मुझे रञ्जभारी। रहेग़म०१॥ सावन॥ लगा सावन तरसें अँखियां। न भेजी पीतमने पतियां॥ उसी ग़मसे धड़कें छतियां। सुनाता कोई पीकी बतियां॥ दोहा॥ घर घर सखियों ने किया तीजनका त्योहार। मैं पीतमकी यादमें सजनी बैठी मनकोमार॥ टेक॥ हुआहै मुझे रञ्जभारी। रहेग़म० २॥ भादों॥ घटा भादों में घिरि आई। उमरि है मेरी लड़काई॥ मेरे नहिं आये हैं साईं। झड़ी पानीने लागाई॥ दोहा॥ कोकिल हंस चकोर अति दादुर शब्द सुनाइ। मोर शोर करते जंगल में सुनि

जियरा घबराइ ॥ टेक ॥ न भावै मुझे सेज प्यारी। रहेग्राम० ३॥ कार॥ कार में विरह वियोगिनि नारि। महलमें बैठी आसनमारि॥ गये परदेश मुझे घरडारि॥ मेरेसँग पियाने कीन्हीरारि॥ दोहा॥ बिरह फौज तनपर चढ़ी रहे न दिलको चैन। ईश्वरने ये दुखदिया बिछुड़ाया दिनरैन॥ टेक॥ यही भय लगै उमरि बारी। रहे० ४॥ कातिक॥ दिया कातिक ने यह आज़ार। मिलाया नहीं मुझे दिलदार॥ शमअरोशन कूचो बाज़ार। खुशनुमाहुये दरोदीवार॥ दोहा॥ नेह हमनका तजिदिया बिनागुनह तक़सीर। मुझे क़फ़स में डालदिया अब नैनन बरषत नीर॥ टेक॥ मेरी किस्मत की बलिहारी। रहेग्राम० ५॥ अगहन॥ कहे अगहन क़ासिद बुलवाय। खबरदे मुझको पीकीलाय॥ दवायत क़लमदान मँगवाय। लिखे दिलबरको सखुन समुझाय॥ दोहा॥ बालम तुम मोहिं छोड़कर करी गैरसे प्रीति। मेरा तन चूना हुआ दिलबर देखि प्रीति की रीति॥ टेक॥ कलेजे हुआ दाग़ जारी। रहेग्राम० ६॥ पूस॥ पूस में पड़ै शीतभारी। रहे चश्मों से अश्कजारी॥ करी ना पीतमने यारी। भूख बिसराई मैं सारी॥ दोहा॥ अपने २ घर सखीं सोईंपीकेपास। लेटि रहीं फूलों की सेजपर पूरन मनकी आस॥ टेक॥ मुझे बेचैन किया वारी। रहेग्राम० ७॥ माह॥ माह ऋतुबसंतअलबेली। दाउँ मैं पीतम से खेली॥ मुसीबत बड़ीकड़ी झेली। मिला फिरभी न मेरा मेली॥ दोहा॥ दरदर में माली लिये बाली और गुलहार। मैं बालम बियोग में सजनी बैठी मनको मार॥ टेक॥ नहीं घर मेरा है घरवारी। रहेग्राम० ८॥ फागुन॥ सखी फागुन में बजत मृदंग। मैं अपने दिलको कीन्हा तंग॥ चलें कुमकुम अबीरके रंग। भरें पिचकारी मारें अंग॥ दोहा॥ केसरि और कस्तू-

रियां इतर लायची पान। लै गुलाल सबकेतन सखियां मलैं मधुर मुसुकान॥ टेक॥ मरूं मैं विरहाकी मारी। रहेग़म० ६॥ चैत॥ चैत बन २ फूलेटेसू। दियो तजि मैं अपना देसू॥ पिया ढूंढ़नको परदेसू। चली मैं धरि योगिनि भेसू॥ दोहा॥ चलीजात बन २ सखी सबसे पूंछे राह। पहुँची जब परदेशमें सजनी करी पियाकी चाह॥ टेक॥ मिलावह भई मजेदारी। रहेग़म० १०॥ बैशाख॥ परी बैशाख वतनआई। सेजफूलोंकी बिछवाई॥ पियासीनेसे लागाई। सभी दिलकी मुरादपाई॥ दोहा॥ कोठेपर बिछवा पलँग सोई गलेलगाय। चूमि २ रुख़सार प्यारकर पड़े २ मुसुकाय॥ टेक॥ मुरादैं हासिलहैं सारी। रहेग़म० ११॥ जेठ॥ जेठयकजाममये मँगवाय। पिया हमने पीको पिलवाय॥ नशे में हम और हमदम आय। हुये ग़ाफ़िल उल्फ़तमें जाय॥ दोहा॥ रहेहदीश गाँवमें गयादीन सर्नाम। बारहमासी विरह रागिनी ललित सुधासरबाम॥ टेक॥ पास बाज़ार मकांभारी। रहेग़म दिलको हरवारी १२॥ पनिहारी लीला॥ करे सोलह सिंगार नारी। गई जल भरने पनिहारी॥ टेक॥ सांगि सैननकी हैं मारी। मोहनी चितवनि में ढारी॥ बदन पर जोबन है भारी। झलक चेहरे की है न्यारी॥ दोहा॥ मृगशावक नैनी परी कटि चीतेउनिहार। सुर्ख चूनरी शिरपर सोहै गर्दनमें गुलहार॥ टेक॥ मधुर बतियां छबि उजियारी। गई जल० १॥ बदन है सांचे का ढाला। अशौंलब से गुल लाला॥ खिला ठोढ़ीपर तिल काला। नूरबख़्शा है हक़ताला॥ दोहा॥ छाती पकड़ी श्यामने करी बहुत तक़रार। अदल कंसका राज है प्यारे पकड़ बुलावैमार॥ टेक॥ नहीं डरतेहो बनवारी। गई जल० २॥ कान्ह ग्वालिन को समुझाया। दान जोबन का ठह-

राया॥ मदन तनमें क्या ठहराया। हमारे दिल को उलझाया॥ दोहा॥ डरपातीहो कंसको सकुचिरही मनमाहिं। कंसराज को मारिके प्यारी करूंराज ब्रज माहिं॥ टेक॥ खुशीभई मनमें सबनारी। गईजल० ३॥ गई जलभरि पनिघट से बाम। रहो मनभाइ लाड़िलो श्याम॥ हदीरा गाँवनाव सर्नाम। करूं तामें सुदाम आराम॥ दोहा॥ नैननमें कमला बसी मनमोहन उरध्यान। पनिहारी ने मनहरिलीन्हों लगा इश्कका बान॥ टेक॥ करी बन्दिस गयान भारी। रहे ग्राम दिलको हरबारी ४॥ लावनी मारफ़त रंगवशींकरन॥ हर घड़ी सुबह और शाम यादगारी है। गुलबदन तेरे मिलने की इन्तिजारी है॥ टेक॥ यह अदां मिशालेहूर तेरी रोशनहै। अँखिया दो मोतीचूर जवां सूसमहै॥ गालों पै हुआ इस्क दर तेरे जोबनहै। मखमल से मुलायम शिकम वं नाजुकपन है॥ टेक॥ दुनियां में तेरी सरनाम यार यारी है। गुलबदन० १॥ नागिन मिसाल देखी वह काली काकुल। होगया परेशां जुल्फसे उसकी सम्बुल॥ चश्मों में बसी रहती है यह सूरत बिलकुल। आशक मैं हुआ ज्यों फ़िदा है गुलपर बुलबुल॥ टेक॥ आशक़ मैं हुआ तुझपरहूं ये बीमारी है। गुलबदन० २॥ है बहुत मेहरबां यार तेरी पेशानी। गुलशनमें नहीं गुलहैं गुल्फामकी सानी॥ दिलगिरफ्तार होगया इश्कमें जानी। करकतल सनम या छोड़ रहे जिन्दगानी॥ टेक॥ उल्फ़त के दाममें फँसा अब अख़्यारी है। गुलबदन० ३॥ बेवफ़ा होगये खफ़ा यार तुम हमसे। करतेहो जफ़ा हरदफ़ा सनम तुम हमसे॥ लड़ने का मुफ़स्सिल हाल कहो तुम हमसे। होगई बुरी हालतन् कहो तुम हमसे॥ टेक॥ यह राह और अन्दाज तेरी न्यारीहै। गुलबदन० ४॥ छबि अजब माज जलबद हमदमकी दम

का। दिल फ़िदाहुआ तुझपर बिल्कुल आलमका॥ करबयां सनम यह हाल मुहब्बत कमका। मालूम नहीं कुछ सबब इलाही ग़मका॥ टेक॥ कुछ किया बुरानाकाम करीयारी है। गुलबदन० ५॥ तुझपर दिल मेरा हुआ सनम दीवाना। गिरता है शमापर उल्फ़तसे परवाना॥ अबहै लाज़िम गुलबदन गले लगजाना॥ है चमन गुले गुलजार अटक नाजाना॥ टेक॥ बंदिस गयानपरसाद ज़बाँप्यारी है। गुलबदन तेरे मिलनेकी इन्तिज़ारी है ६॥ बारहमासा लावनी रंगतबशीकरन॥ तनउठी बिरहकी आग कहूं समझाई। जबसे गये पिउ परदेश मिले नहिं आई॥ आषाढ़॥ आषाढ़ महीना लगा घटा घिरिआई। डरपै जिय सूनी सेज देखि भयखाई॥ जुगुनू चमकै चहुँओर चलै पुरवाई। जारी आंखों से नीर रहा ग़म छाई॥ टेक॥ दिलमें अँदेशा अतियन्ति सँदेशा न पाई। जबसे०१॥ सावन॥ सावन सखियां झूलें हिंडोल रसमाती। मोहिं सुनि सुनि कोयल बोल नींद नहिं आती॥ सननन पुरवाई चलै उमँग लहराती। ऐसे बेदर्दी पिया जरावत छाती॥ टेक॥ दिन रैनि चैननहिं पड़ै खबरना पाई। जबसे गये पिय०२॥ भादौं॥ भादौंमें सखी नहिं आये उधरकेबासी। हमसे छांड़ो स्नेहडारिके फांसी॥ जानी अपनी तक़सीर न हैके दासी। गये सूनेघरमें छोड़ि यही मनभासी॥ टेक॥ मनमें आवैमें प्राणतजौं बिषखाई। जबसेगये पिय०३॥ आसौज॥ अबलगा माह आसौज बिरहतन छाई। सखि मदन करै क्या ज़ोर जवानीआई॥ मोहिं पिया बिना बेचैन कहूं समझाई॥ गये चार महीना बीति खबरि ना पाई॥ टेक॥ बिरहाने माराबान आगरही छाई। जबसेगये पिय० ४॥ कार्तिक॥ कातिक में रहे परदेश हमारे पीया॥ वेगये क़फ़स में डालि हमारो जीया॥ रोशन हाँडी

फ़ानूस झाड़ और दीया। घर २ सखियोंने बार उजेला कीया॥ टेक॥ हैबहुत मुझे तकलीफ़ कही नाजाई। जबसे गये पिय० ५॥ मार्गशिर॥ अगहन सर्दीने ज़ोरकिया जबआई। मुझे किया पिया बेचैन उमँग तरुनाई॥ मुझे इधर अकेली छोड़ उधरको जाई। केहू सौतिनियां बिलमाय सुरति बिसराई॥ टेक॥ लाज़िमहै उन्हें अब आय गले लगिजाई। जबसे गये पिय० ६॥ पौष॥ जलि जलि कुइला भई पूष मदन तनबाढ़ो। चहुँदिशिते तनमें शीत लगत अति गाढ़ो॥ बिन पिया लगेडरु शीत अगारी ठाढ़ो। गइबीति छमाही एक क्रहेको साढ़ो॥ टेक॥ गये छोड़ हमें परदेश तरस ना खाई। जबसे गये पिय० ७॥ माह॥ आई बसन्तऋतु खिली माहमें बाली॥ अब केहिसे दिलकी दर्द कहूं मैं आली॥ गेंदा गुलावके फूल ले आते माली। घर२ लावैं गुलहार लगाकर डाली॥ टेक॥ लावै न यहां कोई फूल देउ समुझाई॥ जबसे गये पिय०८॥ फागुन॥ फागुनमें होलीभई पिया नहिं आये॥ करइधर ग्रमें आज़ार उधर बिलमाये॥ चहुँओर चलें कुमकुमा अबीर उड़ाये। वह अपने दिलमें ज़रा शरम नहिं लाये॥ टेक॥ कोई जाइ कहो समुझाइ मिलैं वह आई। जबसेगये पिय० ९॥ चैत॥ अब लगा महीना चैत मिलाना मेली॥ चहुँदिशि गुलाब केतकी खिली चामेली॥ योंकहे शोचमें नारि साथले चेली॥ लेआऊं पियाको डालि अंगमें सेली॥ टेक॥ योगिनि बनि पीके देश चली हर्षाई। जबसे गये पिय० १०॥ बैशाख॥ बैशाख भई अतिधूप चली वह नारी। मुरझाया सकल शरीर उमरि है बारी॥ कर मलि २ के पछिताय चलत जब हारी। फिरगई हमदमके पास बिरहकी मारी॥ टेक॥ लेकर अपना पति साथ वतनको आई। जबसेगये पिय० ११॥ जेठ॥ वह जेठ मदन

में भरी झलक झलकाती ॥ कोठेऊपर लैजाय पलँग बिछवाती ॥ उल्फतमें ग़ाफ़िलहुये लगायाछाती । कहि२ पिछला आजार पड़ी गरमाती ॥ टेक ॥ बन्दिस गयानपरसाद कहनि मन भाई । जबसे गये पिय परदेश मिले नहिं आई १२ ॥ कृष्णस्तुति ॥ कमलापति दीनानाथ दयाल कन्हाई । तुम दर्शदेउ भगवान दासको आई ॥ तुम द्रुपदसुताको कष्ट हरो छिन माहीं । तुम खम्भा डारो फारि एक पल माहीं ॥ प्रभु भक्तन हित अवतार लेत जगमाहीं । है सप्तद्वीप नवखंड दूसरो नाहीं ॥ जल वर्षत तुमने नखपर गिरिधरिलीन्हो । सुरपतिको तुमने गर्वमेटिप्रभु दीन्हो ॥ तुम गंगासुतको प्रणराखो नँदलाला । गोपिन दुखहित तुम मारि कंसको डाला ॥ हनु औ पारथ को आप बराबरि भाखो । हुइ कमठरूप तुमआइ बांधशर राखो ॥ प्रभु दुर्योधनको नाश आपकरिडारो । सबविधि समुझायो नाथकहो उसटारो ॥ भ्राता अपनेको तुम हत्या लगवाई । करवाये तीरथ भीम हन्यो कुरुराई ॥ बाणासुरसे जहँकरो समर अधिकाई । तहँ महादेवसे युद्धकरो प्रभुजाई ॥ शिवने शीतज्वर बाण उधरसे छाड़ो । तुम विषमज्वर संधानि बाणको फाड़ो ॥ लै जयतिपत्र सुर सुता नाथ लैलीन्हो । अनिरुद्ध कुँवरके साथ व्याहकरि दीन्हो ॥ सब दासनको प्रभु कष्टहरो बनवारी । देगयादीन को अमर भक्ति गिरिधारी ॥ बारहमासारेखता ॥ टेक ॥ पड़ी जोबनकी मदमाती नहीं आराम आती है ॥ असाढ़ ॥ घटा आसाढ़ में छाई सखुन कोयल सुनाती है । गयेपरदेशको प्रीतम जिगर बिरहा जलाती है ॥ सावन ॥ चलै सावन में पुरवाई सखी तीजें मनाती हैं । कलेजे में मेरे हूकें पपीहाकी सुनाती हैं ॥ भादों ॥ लगेडरमोहिं भादों में गरज बादलकी आती है । कहेंरोरो खड़ी कामिनि कोई अपना न साथी है ॥

कार ॥ बिरहतन कारमेंछाई मदनकी फ़ौज आती है। मरूं मैं रंज की मारी ये रोरोकर सुनाती है ॥ कातिक ॥ कहे कातीक दुख अपना नहीं कोई संगसाथीहै। कफ़स में करगये हमको ख़ता अपनी न पाती है ॥ अगहन ॥ कहे अगहन बुलाकासिद खबरपीकी मँगाती है। तुम्हारे बिन यहां मुझको नींदआंखों न आती है ॥ पौष ॥ मदनतन पूसमें बाढ़ा जिगर जाड़ा सताताहै। मुझे हमदम बिनादेखे नहीं कुछ चैन आता है ॥ माह ॥ नहीं वह माह में आये धड़कती मेरीछाती है। पड़ैसरदी लगैतनमें कलेजे दाग़खाती है ॥ फागुन ॥ लिये कुमकुम सखीसखियां बदनतकि २ चलाती है। मुझे फागुन है दुखदाई खबर उनकी न आती है ॥ चैत ॥ हुईबाहार चैतैमें ग़मे दिल सब उड़ाताहै। मेरा साजन सुरति अपनी तसव्वुरमें न लाताहै ॥ बैशाख ॥ मिला बैशाख में हमदम उसेछाती लगाती है। खुशी ईज़ाद कोठेपर पलँग अपना सजाती है ॥ जेठ ॥ जेठ हासिल मुरादें सब पिया अपना जो पायाहै। गयादीन अब मुश्ताक़िक़ अक़्लके कहकर सुनायाहै ॥ हिंडोलाराधाकृष्ण ॥ श्याम मोहन श्यामागोरी। हिंडोलाझूलैं एकजोरी ॥ टेक ॥ पहिरि चूनरी और सारी। चली बनठन ब्रजकी नारी ॥ मदन तनमें पीकीप्यारी। अंगछबि जिनकी उजियारी ॥ दोहा ॥ करनफूल कानौंखिले माथे बेंदी लाल। नक़बेसरि नौरनपड़ी पचलड़ी गले बनमाल ॥ टेक ॥ करै चितवन में चित चोरी। हिंडोला० १ ॥ खम्भयुग सो हैं कंचनके। जाल बिचबिचहैं हीरनके ॥ लालझलकैं दोडांड़िनके। देखि मनमोहैं सन्तनके ॥ दोहा ॥ मलयागिरि चन्दनपटा घन घुमण्ड चहुँओर। बोलत कीर चकीर मोर हैं झूलत युगल किशोर ॥ टेक ॥ मदनमें भरे उमरिथोरी। हिंडोला० २ ॥ सुमन कुञ्जन

कदम्बफूले। देखि छवि सुरगण सुधिभूले॥ लगीझंपन में मुख-तूलैं। हिंडोला युगल खड़ेझूलैं॥ दोहा॥ वृन्दावन गोकुल सखी नन्दगांव की नार। भरीमदन में बामसुन्दरी करैं तीजत्योहार॥ टेक॥ कोईश्यामल कोईगोरी। हिंडोला० ३॥ श्यामने वंशीझन-कारी। चराचर मोहे एकवारी॥ भनकमुनि शिव समाधिटारी। भयोसुख तेहि अवसर भारी॥ दोहा॥ अगवाड़े इस्कूलके दौलत खाना आम। ललितछन्द गावत गयानहै लीलाश्यामाश्याम॥ टेक॥ सुनोप्रभु इतनी अरजमोरी॥ दानलीला॥ यशोदा वरजोका-न्हाई। लूटकर मेरी दधिखाई॥ टेक॥ गईवंशीवट दधिबेचन। निकट मेरे आये मनमोहन॥ अचानक आकर वृन्दावन। लगे मेरी च-हियां झकझोरन॥ दोहा॥ समुझाया मैंने बहुत हटको मानत नाहिं। झिंझट में चोलीमसकाई इतउत चितवत जाहिं॥ टेक॥ चीरफारी लै ढिगआई। लूटकर० १॥ जिकर सुनिये वंशीवटकी। आय पटखोली घूंघटकी॥ सखनने बाँह मेरी झटकी। झपटकर पटकिदई मटुकी॥ दोहा॥ ऐसे मोहनढीठ हैं डगर मचावैं रार। तोरिनौलखा हारहमारो चूनरि दीन्हीफार॥ टेक॥ दूधदधि गोरस ढरकाई। लूटकर० २॥ गावँगोकुल अरुबरसाना। रोज वृन्दावन है आना॥ हुआ है मोहनदीवाना। बांट हरिके है दधिखाना॥ दोहा॥ हटको मइया श्यामको क्योंरोकत मेरीबार। हैहाकिम ज-ल्लाद यहांका कालाकरै लिलार॥ टेक॥ सजा वह देवैगा माई। लूटकर० ३॥ गये घर मोहनसैलानी। पकड़कर कही नन्दरानी॥ ढीठ हो हम तुमको जानी। लूटिदधि लाड़ाई ठानी॥ दोहा॥ सुनि मइयाके बचनहरि कहनलगे समुझाय। फिरैं ग्वालि गवाँरि ये माई झूंठी चुगलिखांय॥ टेक॥ रंपटार मटुकीढरकाई। लूटकर० ४॥

लगानेआई झूंठानाम। नहीं मय्या मेरा यहकाम ॥ हार उलझा झाड़िनमें शाम। लगाने आई मुझकोबाम ॥ दोहा ॥ सुनि यशुमति मोरे बचन मन अपने मुसकाइ। बातन में समुझाय कन्हाई मायलई उरमाइ ॥ टेक ॥ ग्वालिनी मनमें शरमाई। लूट-कर० ५ ॥ मुकुटशिर कानों में बाला। गले में बैजंतीमाला ॥ पड़ी चरणनमें ब्रजबाला। जियेमाई तेरागोपाला ॥ दोहा ॥ नगरहर्दोरा सुजनजन अशराफों का बास। जोड़ाछंद गयान ललित है घर बज़ार के पास ॥ टेक ॥ भक्ति हरि चरणन की पाई। लूटकर मेरी दधिखाई ६ ॥ लावनीरंगत वशीकरन ॥ नरगिसी आंख दिखलाके झलक जोबनकी। कुलकिये फ़िदा यह अदा तेरी चितवनकी ॥ टेक ॥ खूबीये तेरी दुनियांमें खूबरोशन है। मतलूबी यारों में जलवह अफ़गनहै॥सम्बुलसे बिखड़े बाल ज़ रांसू सनहै। और बदनमें जिसके मदनका गोमस्कनहै॥ टेक॥ यह नाज़ोअदा दिखलाके नोक नैनन की। कुलकिये० १ ॥ कानों के बाला कौनकहे वह गाई। झुमके चूमें रुख्सार ये तेरेतिलाई ॥ आलममें रोशनी यारतुम्हारी छाई। हक़तालाने ऐसी तस्वीर बनाई ॥ टेक॥ ज़रीकुलाह शिरपर वह क़त्रा साठनकी॥कुलकिये फ़िदा० २॥ है क़हरकिसी आशक को किसीकोप्यारे। कोई पड़े नीमजां फिरें कोई मतवारे॥ दिलचैरों को देदेके हो उनसे न्यारे। घर घाले हज़ारों यार व लाखों मारे ॥ टेक ॥ मिस्सी दंदाँ लाली। लबे लाले इमनकी। कुल किये फ़िदा० ३ ॥ जिसवक्त चमनको आप चलेजाते हैं। गुले गुल्शन इस्तक़बाल को सब आतेहैं ॥ उसवक्त जो कोई यार साथ आते हैं। खुश होके इनामे बोसा वो फिर पाते हैं ॥ मालूम नहीं कब निगह मिहरकी उनकी। कुलकिये फ़िदा० ४ ॥ यह सख्नहै वह जो पड़े

किसीके पाले। फिर वह क्या क्या उसमें अन्दाज निकाले॥ हैं सखुन ये दुर्रेइतीम मुसलसिलमाले। मैं ढूंढ़ २ उर्दू के क़ाफ़िया डाले॥ टेक॥ बन्दिश गयानपरसाद लावनी मनकी। कुल किये फ़िदा यहअदा तेरी चितवनकी ५॥ बरसात बिरहिनी रंगतवशीकरन॥ परदेश पिया बरसात छोंड़िगयेनाथ कहूं क्या बात सेज तरसाती। टेक॥ बालम तुम बिन मोहिंनींद नेकुनहिं आती॥ आषाढ़॥ आषाढ़ लगाहै मास लेउँ मैं साँस पिया नहिं पास उमँग लहराती। बेवफ़ा हुयेहैं खफ़ा पड़ी तरसाती॥ घरडारि हमैं परदेश गये केहि भेश जाउँउसदेश न भेजीपाती। इन रंजोंसे फटगई हमारी छाती छन्द॥ मुझे रञ्जहुआहै भारी। मैं मरूं बिरहकी मारी॥ लीन्ही नहिं संबरि हमारी। गैरोंके कहे हरवारी॥ टेक॥ गैरो के कहे हरवारी उमर है बारी। रञ्जहै भारी मदन मदमाती। बालम तुम बिन मोहिं नींद नेकुनहिं आती १॥ सावन॥ सावन जोबन की भीर बरषता नीर तालगम्भीर भरेपानीसे। मेरापियासे जिया न मिला मेहरबानी से॥ मोहिं छोंड़िगये परदेश जाउँ किसभेश लाउँ उस देश लगूं सीनेसे। बादल करते घनघोर शोर जल बरसे॥ छन्द॥ हिंडोला झूलैंनारी। गुलबदन मदन मतवारी॥ हाथों मेहँदी पिय प्यारी। मुझे दिया पिया दुख भारी॥ टेक॥ मुझे दिया पिया दुख भारी वियोगिनि नारी मिलातावारी नेह लागाती। बालम तुम०२॥ भादों॥ भादों अँधियारी रात हुई बरसात देखि जियजात नहीं घरबारी। रहिघटा फलक में छाय सेज अँधियारी॥ कोयलके बोल वहनार सुनके हरवार गया जी हार रञ्जहो भारी। मोहिं पिया मिलादें खुदा कहीं यक बारी॥ छन्द॥ बन मोर शोर माचावैं। दादुर भयशब्द सुनावैं॥ हम कैसें बालम पावैं। सपनेहु नहिं दरश

दिखावैं॥ टेक॥ सपनेहु नहिं दरश दिखावैं पियाको पावैं मले लागावैं मिलै जो जाती। बालम तुम० ३॥ कार॥ जब लगा महीना कार वो आसन मार छोड़ घरबार रामगुणगाया। ले गया वतन में जहां मेरा मनभाया॥ मुझे पिया मिलायालाय लगी गलेजाय सेज बिछवाय इतर अँगवाया। उन चूमि चूमि रुख्सार मजा अतिपाया॥ छन्द॥ मिलगया मुझे जब जाती। कहीं गयादीन बरसाती॥ तनमदन पड़ी गर्माती। सीनेसे उसे लगाती॥ टेक॥ सीने से उसे लगाती पड़ी गर्माती अधिक सुखपाती हिये हर्षाती। बालम तुम बिनमोहिं नींदनेकु नहिंआती ४॥ मारफत॥ बदनपरजोबन कोकिलबैनामहलपर खड़ीलिड़ातीनैन॥ टेक॥मोहनी चितवनि में डाली। चाल चलती क्या मतवाली॥ पानमुख में हैं बंगाली। लबोंकी झलकिरहीलाली॥ दोहा॥ अजबनाज अन्दाज छबिबदन बसंती चीर। मृगनैनी शशिबदन जिसम पर है जोबन की भीर॥ टेक॥ बुलाती हमको करि२ सैन। महलपर० १॥ गयामैं जब बिरहिनिके तीर। वहां माशूकोंकी भई भीर॥ खुशीमन लखि जोबन गंभीर। उठी दिलमें बिरहाकीपीर॥ दोहा॥ माथेपर झूमड़ खिला गले पड़ा गुलहार। करनफूल बाला झुमके वह चूमिरहे रुख्सार॥ टेक॥ रहे कानों में वह दिनरैन। महलपर० २॥ कमर जनपत्री शिकमसखमल। फिदा हम ज्यों गुलपर बुलबुल॥ पेंचक्याहैं कालीकाकुल। हुआहै परेशान सम्बुल॥ दोहा॥ कितने दिल घायल किये लगाइरककाबान। मुखसे बतियां मधुर मनोहर निकलैं मीठीतान॥ टेक॥ सुनै जो कोई हो बेचैन। महलपर० ३॥ रात में वह ढिगमेरे आय। महलपर पलँग बिछायाजाय॥ लियामैंसीने उसेलगाय। पीर सब भई गई गरमाय॥ दोहा॥ च-

मनगुले गुलज़ार है दुनियां में मशहूर। गयादीन सरनाम इलम का जलवह किया ज़हूर॥ टेक॥ मेहरबां मोहन सायाऐन। महलों पर खड़ी लड़ाती नैन ४॥ रेखता॥ जानकी कंत रघुराई हिये में बांस करुआई। शरन चरनोंकी तुमराखो है ज़ाहिरतेरी प्रभुताई॥ तुम्हारा नाम ऐसा है कि दिलको चैन उपजाई। बिना सुमिरन घरीपल छिन जिये आराम ना आई॥ तुम्हारी सांवली सूरत बसी दिलमें है रघुराई। छुड़ा दे क्रोध मद तनका तुम्हींहो नाथ सुखदाई॥ करत प्रतिपाल हो स्वामी जो आयो दासढिग साईं। मेरी चश्मोंके हो तारे करत दासनको सुखजाई॥ ग्यानपरसाद कर जोरें बसौजियमाहिं रघुराई। तुम्हारा ध्यान और सुमिरन वो दिल में अपने आजाई॥ भजन॥ रघुबर भजन सबन बिसरायो॥ जग में फिरत बने तपसी ह्वै रूपस्वरूप बनायो। मांगत भीख उदरहित घर २ क्रोध बिरोध बढ़ायो॥ परनारी लखिमन ललचायो काम हृदय उपजायो। वेश्याके प्रसंग में मनुजन खानपान बिसरायो॥ भ्राता पिता पुत्र अरुनाती कर्म कुकर्म सिखायो। झूठसांचकहि अपयश करिकेंद्रव्य जमाकरिपायो॥ अंतहि समय पापशिर धरिके यमपुर राह सिधायो। बार २ अब गयादीनके रामभजन मन भायो॥ यथा॥ मनभजु रामरमादिनरात। संसारी माया तजि तन में राम प्रीति उपजात। मनमें कपट जीभमें रघुबर नहिं यह प्रीति सुहात॥ ज्यों चकोर निरखै चन्द्रहि रबि उदय कमल मुसुकात। त्यों सियरामचरण मन मूरख रटुचातक जिमि स्वात। जैसे काम बिबश नर ह्वैके परत्रियसों हर्षात। रामचरण लौलीनहो प्यारे प्रीतिकरो तिहि भांत। क्रोध बिरोध तजो मद तन को नाश होहिं आरात। दास ग्यान कहत करजोरे दरशदेहु मोहिं तात॥ राग-

द्रौपदी॥ अब तुम कष्ट हरो बनवारी। दाससुता सुतको सुतको सुत लायो सभा मँझारी। अमरराज सुत ता भ्राता त्रिय चाहत बसन उघारी। द्रोणी पितु ता मित्र सुता फिर सुमिरण कृष्ण उचारी। कमलापतिके तरणि तनयमें भनकपरी यकबारी॥ कुन्तीसुत को नाम बिनाहरि कुरुगुर राहसिधारी। धर्म्मराज सुतकी त्रियको पट बाढ़ो अरु अरिहारी। जनकसुता जननी शिर हनि के दे गयान गिरिधारी॥ वैद्यलीलाभजनरागबिहाग॥ गिरिधर बैद रूप धरिलीनो। चूरणचटनी पाग आदिरस चिन्तामणि परवीनो। कुञ्जनमें प्रभु बैद बैद करि टेरिसखिन सुख दीनो। कोई गोपी बीमार पड़ीहो करें तासु दुख हीनो। घर२ की सखियां उठिधाईं सबको बोधनकीनो। झोलीसे गोली प्रभुदीन्हीं सबको दुख हरिलीनो। बरसाने बिच जायपुकारो सब ग्वालिनि सुनिलीनो। देखि नब्ज हरि बोले तासों रोग तिहारोचीनो। यौवनज़ोर तिहारे तनमें भयो अधिक रसभीनो। खड़ीद्वार निरखे चन्द्रावलि नाथ हमें सुखदीनो। दुर्बलदेह बिथाने घेरो और भयो तनखीनो। ब्रजबाला मोहीं सब हरि पर उन सबको सुखदीनो। कहत गयान चरित हरिलीला जासु कृपा दुखहीनो॥ द्रौपदीस्तुति॥ कान्हतुमदासनको सुखदाई। धर्म्म पुत्र त्रियने जब सुमिरो कान्ह कान्ह दुखपाई। अन्धसुवन मोहिं केशपकड़ि के सभामध्य लैआई। सुरसरिसुत शकुनी दुर्योधन जुरेसभा सबआई। तरनितनय द्रोणी सँग आये सोउ न सकत बचाई। पांचोपति मेरे मौनभये हैं देखत देखत लाज न आई। द्रुपदसुता यहिबिधि टेरनमें बारबार रटलाई। कमलापतिप्रभु अंतरयामी भनककानमें आई। आयचीर में प्रकटभये हरि कीन्हीकान्हसहाई। दुश्शासन पापी अपराधी धरत न धीर कन्हाई। बाढ़ो

चीर द्रौपदी को फिर रहत न सभा समाई। हारिमानि जियजानि कृपानिधि बैठिरहो शरमाई। कीन्ही प्रभु सहाय दासनकी गयादीन कहिगाई॥ रागपीलू॥ निशिदिन यादकरौ यदुराई। प्रभु बिन कोई काम न ऐहै पितुमाता सुखदाई। अन्तसमयनहिं कोई साथी फिरि पाछे पछिताई। दुर्लभ तन नाहीं फिरि मिलिहै तजो कपट कुटिलाई। कमलापति को निशिदिन सुमिरन करो प्रेम से भाई। बड़ेबड़े भूप भये पृथ्वीपर तिनहिं कालने खाई। धनधरती अरु राजपाटले काहुनकीन्ह सहाई। नैकुजागु अबरे मनमूरख त्यागु हृदय जड़ताई। गयादीन लेखो जब हुइहै तब कलई खुलि जाई॥ भजन शिवस्तुति॥ हे गौरीशंकर हो दयाल। दरशन बिन अँखियां हैं बिहाल। लोचन तीनि सकल दुखमोचन लसत ईश अर्धङ्गब्याल। हाथ त्रिशूल बजावत डमरू खायभङ्ग होते निहाल। शीशगङ्ग वृषपति विषधारी भरेसुशोभित मुण्डमाल। नीलकण्ठ मृगछाला ओढ़े चन्द्रमाथ सोहत कृपाल। भूषणभस्म पद्म पद सोहत वृषभचढ़े हैं नयनलाल। तीनों लोक दर्शको आवत दर्श देत तुमचन्द्रभाल। पास तुम्हारे जो जनआवत मेटिदेत प्रभु मोहजाल। शम्भूनाथ आश दर्शनकी गयादीन गावतखयाल॥ वसन्तऋतु सवैया॥ फूलेगुलाब निवारिके फूल तरङ्ग चमेलीकी बागनछाई। चम्पकेपत्र समाजघनो कचनार अपार पुकारसुनाई। शीतलवायु सुगन्धअपार मलिन्द रहे तहँ चित्तलुभाई। किंशुकने जब जोरकरो तब भक्ति गयानप्रसादने पाई। बोलिचकोर उठीकरि शोर मलिन्दन जोर व लाल चुहकैं। कोकिलबोल सुहावतहैं कलिका खिलिके बहुबारमहकैं। टेरिपपीहा गयानउठो बन में करि शोर बहमोर कुहकैं। मस्तकपोत अकाश उड़ें बनबासिनके मन

देखिबहकें ॥ रस सवैया ॥ आईहो आजु इतै जो सखी मन यौवन देखि अनन्दछयो। पट भूषण अङ्ग अनेक सजे रतिरूप स्वरूप से हीनभयो। चंचलनैन कटारीबने उमही छतियां मनोजोरनयो। उपमा नहिं गाय गयांनसकें मुख देखि के चन्द्र लजायगयो॥ होलीश्रीकृष्ण मारफतरंगतवशीकरन ॥ यमुनातट मोहन जाय मचाई होली। इत श्यामराम उत जुरी सखिनकीटोली ॥ टेक ॥ आये बसन्त हुइ साफ़फ़सल फागुन में। घनघोर शोर अतिमोर मचाते बनमें ॥ गेंदा अनार गुल खिले सभी गुल्शन में। फूली डाली वृद्दीछाय कुंजन में ॥ टेक ॥ ब्रजकीसब बनिता खड़ीकरैंठठोली। इतश्याम० १ ॥ कोइबदल २ पोशाक सखीआती हैं। कोइ अदां-दार होलीकितान गाती हैं॥ करिकेकरतब कमालदिल उलझाती हैं। मोहनकेगले मिलमिलके मज़ापाती हैं ॥ टेक ॥ गरदनमेंडारे हार नारि अनमोली॥इत श्यामराम० २॥ सोहैं इत सुन्दरश्याम रामद्वौभाई। उतराधा करतविहार परम छविछाई ॥ बंशीकि मधुर धुनि इधर सुघरताछाई। होलीकितान उतलहत मनोहरताई॥ टेक॥ लेकरधाई गुल्लाल अबीरकीझोली। इत श्यामराम० ३ ॥ जुरि २ समूह तकि २ इतउत ब्रजनारी। मारतमोहन के अङ्ग रङ्ग पिच-कारी ॥ चहुँओरचलें कुमकुमा मगन नरनारी। इत पीताम्बर अरु उधर भीजिगई सारी॥ टेक॥ केसरि कुसुम्भ भरिभरिके थारमेंरोरी। इत श्यामराम० ४॥ वृषभानसुताकी सैन समुझि चहुँओरी। जुरि के सखियांलाईं उठाइ बरजोरी॥ लहँगातनमें पहिराय बनाईछोरी कर मोतिनमांग भराय चुनरिरँगबोरी ॥ टेक ॥ यशुदाके पास ले चलीं पिन्हाकरचोली। इतश्यामराम० ५॥ लखिसुतकोरूप अनूप मगनमहतारी। गहिलीन्हो उरिकेधाय कहत दैगारी॥ अठिलाती

फिरें गँवारि सकलयेनारी। अपयशकी डरती नाहिं भईमतवारी ॥ टेक ॥ चुनरीउतारि लहँगाअरुचोली खोली। इतश्यामराम०६॥जग तारन कारनभये मनुजअवतारी। धरती केभार उतारन मुनिमन हारी ॥ कुंजन मैं उत सब नृत्यकरत बनवारी। कोजाने अपरम्पार की लीलासारी ॥ टेक ॥ कहैं गयादीन पियो रामनामकी गोली। इत श्यामराम उतजुरी सखिनकीटोली ७ ॥ बिरहकीबारहमासी ॥ बदनपर मदनकाहै अबजोर। पियापरदेश न आयेमोर ॥ टेक ॥ घटा आषाढ़ गगनछाई। कहे ग्राम बिरहिन समुझाई ॥ लगै तन बैरिन पुरवाई। चैन कुछ दिलको नाआई ॥ दोहा ॥ सबकेपति परदेशते आये अपनेदेश। मैं पापिनि ऐसीभई सजनी पियागये परदेश ॥ टेक ॥ रात दिन बर्षै करैं घनघोर १ कहैं सावन में बनमाली। चली सखियां यौवनवाली। दस्त पैरों में करिलाली। हमैं दुख दीन्हा बनमाली ॥ दोहा ॥ चहुँदिशि घनघुमड़त फिरत भरेताल गंभीर। रात दिना कलपड़त न सजनी पिया हुये बेपीर ॥ टेक ॥ न भावै हमको मोर मरोर २ घटा भादौं छाईकाली। उमरहै क्यामेरीबाली ॥ बोल कोयलकी सुनखाली। गजब में जान मेरीडाली ॥ दोहा ॥ सूनेघरमें छांड़िके मोहिंरहे तरसाइ। सुनि दादुल को शोर सखीरी करमलि २ पछिताइ ॥ टेक ॥ निरखिरही मुखज्यों चंद्रचकोर ३ क्वार की निरमलहै रतियां। पिया होते करती बतियां ॥ लिखौं मैं अब किसको पतियां। लालभई रोइ २ अँखियां ॥ दोहा ॥ नहिं कोई ऐसो हितू खबरि पियाकी देइ। मुझ बिरहिनको लाय मिलावै जगमें यह यशलेइ ॥ टेक ॥ कहे रोरो कामिन कर शोर ४ न आये कातिकमें पीया। जिगर सब जांजर करिदीया ॥ जहां में यह सबबलीया। कठिन क्या हमदम को जीया ॥ दोहा ॥ लीपि पोति घरबार सब बैठि

रही मनमारि। जो बालम परदेश न होते खिलती दिया दिवारि॥ टेक॥ न आये ऐसे कठिन कठोर ५ जाय अगहन में मतवारी। कहे क़ासिद से वह नारी॥ लगादे पीतमसे यारी। बिथा समुझा-ती है सारी॥ दोहा॥ जब तक मैं बाली रही रही पियाके तीर। उमगा जोबन चढ़ी जवानी आपु हुये दिलगीर॥ टेक॥ कहौ कब मिलिहैं दिलके चोर ६ पूप जाड़ेने मनमारा। नहीं आया पीतमप्यारा॥ बजाजाड़े का नक्कारा। किया दिलको पारा पारा॥ दोहा॥ पाती हू भेजत नहीं छाती जरत बनाय। सही जुदाई जाति न उनकी याद जो दिल में आय॥ टेक॥ शीततन लागत पवन झकोर ७ माघ में विनाकंथ कामिन। कहे रोरोके गजगामिन॥ पिया पर-देशहैं सुनु मालिन। नलाव बसंत मेरे आंगन॥ दोहा॥ रहि २ जाती है उमँगि दिलकी ऐ नादान। हमदमके दरशन के कारण हैजियरा हैरान॥ टेक॥ सितारे गिन २ होताभोर ८ लगा फागुन छाई लाली। खुशी जग में बालमवाली। मेरापीतमहै जंजाली। बिपति यह ब्रह्माने डाली॥ दोहा॥ मलिमलि गाल गुलाल अरु ऊपरडारैं नारि। सब सखियां रँग घोरि २ कै छिड़कैं बारम्बार॥ टेक॥ कुमकुमा बरसतहैं चहुँओर ९ चैत कर मलमल पछितातीं। ढूंढ़ने पीतमको जाती। फिरै बनबन वह मदमाती। हाथ तसबी हरिगुण गाती॥ दोहा॥ छोड़ि ऐश आराम सब लिया योग जि-न धाय। कपड़े तनमें पहिरि संदली भस्म रमाईजाय॥ टेक॥ खिजांसे होताहै पतिभोर १० मदनमें भरी मसालेहूर। रोशनी आंखों में भरिपूर। अलखजगाती वह पुरनूर। थकी बन में जब पहुँची दूर॥ दोहा॥ कड़ी मुसीबत झेल के आई प्रियके तीर। बार-बार लगिके सीने से खोई तनकी पीर॥ टेक॥ लिया सवतनका जो-

में जातभई। यौवनदान भयो ब्रजमें अठिलात छांड़ि सब लाज दई॥ तासोंहटको कान्हलाड़िलो ऐसी राह कभी न हुई। दास गयान कहत मोहनके करत सदा हरिरीतिनई॥ रागपुनः॥ पनिघटपर पनियां भरनगई। चित्रसांवलिया सों भेंटभई॥ मेरे निकट आइ मनमोहन गागरियाले पटकिदई। चूमि २ रुखसार प्यारकरि मदनभरी लपिटायलई॥ बारबार हटको नहिं मानो चोली पकड़ मसकायदई। कहत गयान देखि ताकी छबि मनहींमन मुसुकाय गई॥ रागदेश॥ झूलतश्याम श्यामातीर॥ टेक॥ सङ्गसखियन श्याम ब्रजसुखकरत यमुनातीर। वृद्धकन्या युवासखियां भईसबकी भीर॥ रूपराशि अपारसोहत शीलसिंधु गहीर। रति मदनद्युति देखिकै शशिवदन होत अधीर॥ हंस दादुर अरु पपीहा कोकिला और कीर। मोर शोर मचाय सावन उठत नीर समीर॥ जड़ित मणि मुक्ता हिंडोलन भामिनी भइभीर। विविधगाय मनाय झोटा करि उतारैं चीर॥ श्यामतनसोहै पिताम्बर ललितराधेचीर। युगलझूलैं झूलना हैं श्याम गौरशरीर। सुरसुमन बहुभांति बरषत देखि छबि गम्भीर। कहत म्राय गयान गिरिधर हरहु जनकी पीर॥ होलीश्रीकृष्ण रागकाफी॥ खेलैंफाग बिहारीसहित सखियन बनवारी॥ टेक॥ इततौ श्याम राम छबिछाजत करलीन्हे पिचकारी। उत राधिका सहित सखियन के छबिचेहरे की न्यारी॥ रूप देखत रतिहारी॥ खेलैं॰ १॥ तबला अरु मिरदङ्ग तमूरा धुनि सितारकी प्यारी। सारङ्गी मुहचङ्ग मर्जीरा बीन चिकारा तारी॥ श्याम मुरली झनकारी॥ खेलैं॰ २॥ केसरि और अबीर कुमकुमा अतरतरङ्ग निकारी। चलै गुलाल चहूंदिशि ब्रज॰में भरि २ कंचनथारी। खुशी इत उत नर नारी॥ खेलैं॰ २न। मनमोहन तकि २ पिचकारी सखियन के तन

मारी। करि सखियनयुत राधेकी प्रभु बोरिदई तनसारी॥ उड़त अबरख दिशिचारी॥ खेलैं० ४॥ सैनसमुझि वृषभाननन्दनी जुरि समूह एकबारी। लीन्होआइ घेरि उनहरिको विविधरङ्ग भरिझारी॥ मलैंबंदन दैगारी। खेलैं० ५॥ आनँद हर्षत सुरगण वर्षत भयो समाज अतिभारी। यमुनानिकट चरित लखि हरिको गयादीन बलिहारी॥ श्याम चन्दन तनधारी॥ खेलैं०६॥ रागदेश॥ सावनजल बर्षत बारबार। बोलत पँपिहा है डारडार॥ टेक॥ हंसकोकिला शोर मचावैं। कीरचकोर वो मन भर्मावैं॥ नाचिमोर झूरैंशर्मावैं। आपसमें मिलि चारचार १ भ्यानक घटा उठी है सावन। दमकि रही चहुँदिशिते दामिन॥ यमुनानिकट पुरी है पावन। फूले सुमनादिक डारडार २ खम्भहिंडोला कंचनकोरी। रतनजड़े तामें चहुँओरी॥ झूलैंश्याम झुलावैं गोरी। सबसखियां करि पार पार ३ राग मनोहर सखियां गाती। मानो चढ़ी विमानपै जाती॥ मनहींमन अपने हरषाती। उतरी भवसागर पारपार ४ जैजै करत फूल अति बर्षत। मेघ निशान बजैं सुरहर्षत॥ दास गयान परम सुख निरखत। निरत करत हरि हारहार॥ होली॥ खेलैं रघुबरहोरी साथ हैं जनक किशोरी॥ टेक॥ शीश मुकुट काननमें कुण्डल चन्दन तिलक दियोरी। गौरश्याम तन मदन भरो है पीतबसन पहिरोरी॥ उमर जिनकी है थोरी॥ खेलैंरघुबर० १॥ सजि सिंगार तैयार सकलमिल फाग समाज सजोरी। मृगशावक नैनी पिकबैनी दृग चंचल चितचोरी॥ रूपरति देखिलजोरी॥ खेलैं रघुबर० २॥ लैलै कलश नीर सरयूको रंगसुरंग बनोरी। बजत मृदङ्ग शङ्ख सहनाई झाझनकी घनघोरी॥ फिरैं इतउत दौउ जोरी॥ खेलैं रघुबर० ३॥ इतरघुबर भ्राता सुन्दरतनु उत सीताहैं गोरी। हीरालाल जड़े पि-

चकारिन चहुँदिशि रंग चलोरी ॥ वस्त्र दोनों दिशिबोरी ॥ खेलैं रघुबर० ४ ॥ सीता सैन समुझि मनमें सखि रामलषणकी ओरी। धाय धर्सी अरु लपटि झपटिपट दशरथसुत पकरोरी ॥ लाय सखियां बरजोरी ॥ खेलैं रघुबर० ५ ॥ चोत्र्या चन्दन इतर सुगन्धन माथ लगाई रोरी। मारि २ कुमकुमे सखी सब गाल गुलालमलोरी ॥ ध्यान चरणनमें लगोरी ॥ खेलैं रघुबर० ६ ॥ शारद शेशमहेश नाम जपि धरत ध्यान जिनकोरी। सो हरि भवतारन हित जगमें उत्सव करत घनोरी ॥ भक्तिको भाव लखोरी ॥ खेलैं रघुबर० ७ ॥ सुरनरमुनि नारद सनकादिक तुम्हरो ध्यान धरोरी। सोई जाय उतरे भवसागर नरतनु सुफल कियोरी ॥ दास गयादीन रहोरी ॥ खेलैं रघुबर होरी साथ हैं जनककिशोरी ८ ॥ ठुमरी ॥ कान्ह मोहिं मारै चितवनि तोरि। बचन कहत बिष घोरिघोरि ॥ टेक ॥ मोर मुकुट पीताम्बरकांधे। श्याम बरण कछनी कटिबांधे ॥ पीत बसन तन छोरिछोरि १ रोकत गैल छैल बनवारी। ढीठभये ब्रजकी नरनारी ॥ दधिकी मटुकिया फोरिफोरि २ निरत करत ब्रजमें दिन रतिमां। मधुर २ बोलत अतिबतियां ॥ करत उरहनो जोरिजोरि ३ दासगयान रटत निशिवासर। नामलेत गुण रूप उजागर ॥ ख्याल सुधासर बोरिबोरि ४ ॥ राग बैसवाड़ा ॥ अँखियां मनमोहन से अटकी ॥ सूरति मन में बसी साँवरी प्रभु चितवनि जिय खटकी। लागत पवन उड़तहै झालरि चहुँदिशि पियरे पटकी। बचनसुधासम मिष्टबखानत साधनके मन सटकी। छकित भयो मन आजु हमारो मिटीशूल इस घटकी। जाकी सूरति मूरति लखिके छबि त्रिभुवन की भटकी। कहत गयान रागिनी जेहि की शोभा मोर मुकुट की ॥

इति ॥